



ASER 2023: बुनियादी बातों से परे शिक्षा स्थितिका अवलोकन

यह एडिटरियल 19/01/2024 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित ["ASER 2023 report: On education, let's listen to the teenagers"](#) लेख पर आधारित है। इसमें हाल ही में प्रकाशित 'ASER 2023: Beyond Basics' रिपोर्ट के बारे में चर्चा की गई है, जिसमें कई चर्चाओं की ओर ध्यान दिलाया गया है और भारतीय शिक्षा प्रणाली के भीतर बुनियादी अधिगम प्रतफिलों को संवृद्ध करने के उद्देश्य से अनुशासनों की गई हैं।

प्रलमिस के लिये:

ASER 2023, [NEP 2020](#), [सोशल मीडिया](#), [PISA \(अंतरराष्ट्रीय छात्र मूल्यांकन के लिए कार्यक्रम\)](#), [जनसांख्यिकीय लाभांश](#), [STEM](#)।

मेन्स के लिये:

शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट, रिपोर्ट के मुख्य नषिकर्ष, रिपोर्ट में शामिल प्रमुख चर्चाएँ।

पछिले 20 वर्षों में स्कूली शिक्षा और शिक्षा में बुनियादी अधिगम (लर्नगि) के संबंध में होती रही चर्चाओं के कारण भारत में नीतियों एवं प्राथमिकताओं में उल्लेखनीय बदलाव हुए हैं। हाल ही में 'ASER 2023: बयिंड बेसिक्स' रिपोर्ट 26 राज्यों के 28 जिलों में आयोजित की गई, जिसमें 14-18 आयु वर्ग के 34,745 युवा शामिल थे। कशिरों पर केंद्रित यह रिपोर्ट भारत में युवजन आबादी के लिये अधिगम प्रतफिलों (learning outcomes) को बेहतर बनाने और देश के जनसांख्यिकीय लाभांश का अधिकतम लाभ उठाने के बारे में नए विचार प्रदान करती है।

शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (ASER 2023: Beyond Basics) क्या है?

परचिय:

- ASER गैर-सरकारी संस्था 'प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन' द्वारा आयोजित एक राष्ट्रव्यापी नागरिक-नेतृत्वकारी घरेलू सर्वेक्षण है जो ग्रामीण भारत में बच्चों की स्कूली शिक्षा और अधिगम की स्थिति पर एक दृष्टि प्रदान करता है।
- बेसिक ASER 3 से 16 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिये प्री-स्कूल और स्कूल में नामांकन के संबंध में सूचना एकत्र करता है और 5 से 16 आयु वर्ग के बच्चों की बुनियादी पठन (reading) एवं अंकगणित क्षमताओं को समझने के लिये उनका मूल्यांकन करता है।
- पहली बार वर्ष 2005 में क्रियान्वित बेसिक ASER सर्वेक्षण वर्ष 2014 तक प्रतविरष आयोजित किया जा रहा था जसिे फरि वर्ष 2016 में एक वैकल्पिक-वर्ष चक्र (alternate-year cycle) में बदल दिया गया।

उद्देश्य:

- वर्ष 2023 का सर्वेक्षण ग्रामीण भारत में 14 से 18 वर्ष के बच्चों पर, वशिष रूप से रोजमर्रा के जीवन में पठन एवं गणित कौशल को लागू कर सकने की उनकी क्षमता और उनकी आकांक्षाओं पर केंद्रित था।
- हालिया सर्वेक्षण ग्रामीण भारत में युवा विकास के विधि पहलुओं पर साक्ष्य प्राप्त करने के व्यापक उद्देश्य के साथ आयोजित किया गया, जसिका उपयोग सभी कषेत्रों के हतिधारक सूचना-संपन्न नीति एवं अभ्यास के लिये कर सकते हैं।
- वर्ष 2023 के सर्वेक्षण ने निम्नलिखित कषेत्रों में अन्वेषण किया:
 - गतविधि: भारत के युवा वर्तमान में कनि गतविधियों में संलग्न हैं?
 - योग्यता: क्या उनके पास बुनियादी और व्यावहारिक पठन एवं गणित क्षमताएँ हैं?
 - डजिटल जागरूकता और कौशल: क्या उनके पास स्मार्टफोन तक पहुँच है? वे स्मार्टफोन का उपयोग कसि लिये करते हैं और क्या वे अपने स्मार्टफोन पर सरल कार्यों को पूरा करने में सक्षम हैं?
 - आकांक्षाएँ: वे क्या बनने की आकांक्षा रखते हैं? उनके आदर्श कौन हैं?

रिपोर्ट के मुख्य नषिकर्ष क्या हैं?

गतविधि:

- नामांकन में वृद्धि: कुल मलािकर 14-18 आयु वर्ग के 86.8% बच्चे कसिी शैक्षणिक संस्थान में नामांकित हैं। नामांकित नहीं होने वाले युवाओं का प्रतशित 14 वर्षीय कशिरों के लिये 3.9% और 18 वर्षीय कशिरों के लिये 32.6% है।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण: कॉलेज स्तर के युवाओं द्वारा व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने की सबसे अधकि संभावना (16.2%) दखिती

है। अधिकांश युवा कम अवधि (6 माह या उससे कम) के पाठ्यक्रम ग्रहण कर रहे हैं।

■ क्षमता:

- बुनियादी कौशल: 14-18 आयु वर्ग के लगभग 25% बच्चे अभी भी अपनी क्षेत्रीय भाषा में कक्षा 2 स्तर का पाठ धाराप्रवाह पढ़ सकने में सक्षम नहीं हैं।
 - उनमें आधे से अधिक गणति में विभाजन (3-अंकीय संख्या का विभाजन 1-अंकीय संख्या से करने) में समस्या रखते हैं। 14-18 आयु वर्ग के केवल 43.3% बच्चे ही ऐसी समस्याओं को सही ढंग से हल कर पाते हैं।
 - प्रतिदिन गणना: सर्वेक्षण में शामिल लगभग 85% युवा पैमाने का उपयोग करके लंबाई माप सकते हैं जब प्रारंभिक बटु 0 सेमी हो।
 - शुरुआती बटु को स्थानांतरित करने पर यह अनुपात तेज़ी से गिरकर 39% हो जाता है। कुल मिलाकर, लगभग 50% युवा अन्य सामान्य गणनाएँ कर सकते हैं।
 - दैनिक जीवन में अनुप्रयोग: जो बच्चे कक्षा 1 स्तर या उससे ऊपर का पाठ पढ़ सकते हैं, उनमें से लगभग दो-तर्हिई लखिति निर्देशों को पढ़ने और समझने के आधार पर 4 में से कम से कम 3 प्रश्नों का उत्तर दे सकने में सक्षम हैं।
 - वृत्तीय गणना: जो युवा घटाव या अन्य गणति क्रियाएँ कर सकते हैं, उनमें से 60% से अधिक बजट प्रबंधन कार्य करने में सक्षम हैं, लगभग 37% छूट का अनुप्रयोग कर सकते हैं, लेकिन केवल 10% ही पुनर्भुगतान की गणना कर सकते हैं।
 - हालाँकि, बालकिएँ लगभग इस सभी कार्यों में बालकों की तुलना में खराब प्रदर्शन रखती हैं।
- #### ■ डिजिटल जागरूकता और कौशल:
- डिजिटल पहुँच: सभी युवाओं में से लगभग 90% के पास घर में स्मार्टफोन है और वे इसका उपयोग करना जानते हैं।
 - बालकों की तुलना में बालकियों को स्मार्टफोन या कंप्यूटर का उपयोग करना कम आता है।
 - संचार और ऑनलाइन सुरक्षा: सर्वेक्षण में शामिल सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले सभी युवाओं में सेकेवल आधे ही ऑनलाइन सुरक्षा सेटिंग्स से परिचित हैं।
 - डिजिटल कार्य: 70% बच्चे किसी प्रश्न का उत्तर खोजने के लिये इंटरनेट ब्राउज़ करना जानते हैं और लगभग दो-तर्हिई किसी विशिष्ट समय के लिये अलार्म सेट कर सकते हैं।
 - एक तर्हिई से अधिक बच्चे दो बटुओं के बीच यात्रा में लगने वाले समय का पता लगाने के लिये गूगल मैप का उपयोग कर सकते हैं। इन सभी कार्यों में बालक बालकियों से बेहतर प्रदर्शन करते नज़र आते हैं।

Learning outcomes lag among teens

The Annual Status of Education Report (ASER) 2023, titled 'Beyond Basics', is based on a survey of 34,745 people between the ages of 14 and 18 in government and private institutes across 28 districts in 26 states

School enrolment improves



Of the respondents, 86.8% are enrolled in either school or college, compared to 85.6% in 2017, although the percentage drops with age.

On digital literacy



Boys are more than twice as likely to own smartphones compared to girls in the same ages. Girls are also less likely to know how to use smartphones than their male counterparts.



Gender gap narrows



In 2017, 16% of girls aged 14-18 were not in school/college, compared to 11.9% of the boys. In 2023, that gap has narrowed to just 0.2 percentage points.

Better at maths



In 2017, 76.6% could read a Class 2 level text, while in 2023, this was 73.6%. In arithmetic, in 2017, 39.5% of youth could do a simple (class 3-4 level) division problem, while in 2023, this rose to 43.3%.

रिपोर्ट में उजागर हुई प्रमुख चर्चाएँ कौन-सी हैं?

सीमति शैक्षणिक सफलता से उत्पन्न चुनौतियाँ:

- **बुनियादी गणना ज्ञान का नमिन स्तर:** रिपोर्ट बुनियादी गणना ज्ञान (foundational numeracy) के अपर्याप्त स्तरों को उजागर करती है जो बच्चों की दैनिक-प्रतिदैनिक गणनाओं को संभालने की क्षमता में उल्लेखनीय बाधा उत्पन्न कर सकती है।
- **सपाट अधिगम प्रकृषेपपथ:** समय के साथ, छात्रों की शैक्षणिक प्रगति में कोई महत्त्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है।

पाठ्यचर्या संबंधी बाधाओं से उत्पन्न चुनौतियाँ:

- **तीव्र शैक्षणिक प्रतस्पर्द्धा:** भारत में माता-पिता प्रायः अपने बच्चों के लिये अतमिहत्त्वाकांक्षी आकांक्षाएँ रखते हैं। माता-पिता की ये आकांक्षाएँ तीव्र शैक्षणिक प्रतस्पर्द्धा, व्यापक कोचिंग और परिवारों द्वारा भारी खर्च में तब्दील हो जाती हैं।
 - इन सबके कारण परीक्षा का दबाव बढ़ जाता है और परीक्षा परिणाम खराब होने पर छात्र एवं उनके परिवार गंभीर नरिशा के शकिार होते हैं।
- **अतमिहत्त्वाकांक्षी पाठ्यक्रम:** भारतीय शकिा प्रणाली में 'अतमिहत्त्वाकांक्षी' पाठ्यक्रम पाया जाता है जो इस बात पर ध्यान नहीं देता है कि कई छात्रों में वृहत अधिगम कमी होती है और वे ग्रेड स्तर के पाठ्यक्रम को संभाल सकने में असमर्थ होते हैं।
 - उदाहरण के लिये, वर्ष 2009 में जब पहली और अंतमि बार भारत के दो राज्यों ने [अंतरराष्ट्रीय छात्र मूल्यांकन कार्यक्रम \(Programme for International Student Assessment- PISA\)](#) में भाग लिया, तो वे नीचे से दूसरे स्थान पर (अंतमि स्थान पर रहे करिगस्तान से ऊपर) रहे।

अस्पष्ट आकांक्षाओं से उत्पन्न चुनौतियाँ:

- **अध्ययन के लिये प्रेरति नहीं:** सर्वेक्षण के नषिकरणों में बालकिाओं की तुलना में बालकों का एक बड़ा भाग 12वीं कक्षा के बाद पढाई जारी रखने की इच्छा नहीं रखता था। चर्चा के दौरान, बालकिाओं ने कम से कम स्नातक स्तर तक पढाई करने की इच्छा व्यक्त की, जबकि बालक आय अर्जन में लगना चाहते थे।
 - आश्चर्यजनक नहीं है कि वर्तमान में स्कूल या कॉलेज में नामांकति नहीं होने वाले युवाओं का अनुपात आयु वृद्धि के साथ बढ़ता जाता है (14 वर्ष के 3.9% से बढ़कर 16 वर्ष के 10.9% और 18 वर्ष के 32.6% तक)।
- **स्पष्टता की कमी:** जब छात्रों के लिये अपने भविष्य के बारे में नरिणय लेने की बात आती है तो उनके पास स्पष्ट मार्गदर्शन की कमी होती है। कई छात्र इस बात को लेकर अनशिचिति हैं कि उन्हें क्या पढना चाहिये, उन्हें और कतिनी शकिा की आवश्यकता है और उन्हें कसि प्रकार की नौकरियों का लक्ष्य रखना चाहिये।
 - ASER रिपोर्ट में उल्लेख कया गया है कि **परत्येक पाँच में से एक युवा कसि भी ऐसे काम या नौकरी का नाम बता सकने में असमर्थ था** जिसकी वह आकांक्षा रखता था।
- **कोई 'रोल मॉडल' नहीं:** ASER रिपोर्ट में साझा कयि गए आँकड़ों के अनुसार, सर्वेक्षण में शामिल छात्रों में से 42.5% बालकों और 48.3% बालकिाओं के पास अपने इच्छति कार्य के लिये कोई 'रोल मॉडल' नहीं था।

डजिटल अभाव से उत्पन्न चुनौतियाँ:

- **कम तकनीकी रुझान:** इस आयु वर्ग के अधकिांश युवा कला/मानवकी वषिय में नामांकति थे। कक्षा XI या इससे उच्चतर स्तर पर आधे से अधकि बच्चे कला/मानवकी वषिय (55.7%) में नामांकति हैं, जिसके बाद STEM (31.7%) और वाणजिय (9.4%) में नामांकति छात्र हैं।
 - STEM वषिय में बालकों (36.3%) की तुलना में बालकिाओं (28.1%) के नामांकति होने की संभावना कम दखिी।
- **डजिटल घटक का सतही स्तर पर उपयोग:** लगभग 80% युवाओं ने बताया कि उन्होंने संदर्भ सप्ताह के दौरान मनोरंजन से संबंधति गतिविधि, जैसे फलिम देखने या संगीत सुनने के लिये अपने स्मार्टफोन का उपयोग कयि।
 - डजिटल घटक दलिचस्प है क्योंकि एक स्तर पर यह दर्शाता है कि हर कोई जानता है कि बुनियादी चीजों का उपयोग कैसे करना है। लेकिन वे इसका गहराई से उपयोग नहीं कर रहे हैं; वे सतही स्तर का उपयोग कर रहे हैं, जैसे कि मुख्यतः सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना।
- **तकनीकी पहुँच में लगी अंतराल:** बालकिाओं की तुलना में बालकों के पास अपना स्मार्टफोन होने की संभावना दोगुनी से भी अधकि है और इसलिये वे डजिटल का उपयोग करने और वभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये इसका उपयोग करने में कहीं अधकि समय व्यतीत कर रहे हैं।

THOSE WHO HAVE THEIR OWN SMARTPHONE*



AGE	MALE	FEMALE	ALL
14	15.5	7	11
15	26.1	10.7	18.2
16	45.3	17.3	30.5
17	65.4	29.4	46.6
18	79.9	40.6	58.6
ALL	43.7	19.8	31.1

*% of those who can use a smartphone; Source: ASER (Rural) 2023

आगे की राह

आरंभिक बाल्यावस्था के संघर्षों को कम करना:

- **वित्तीय सहायता और अनुदान:** आर्थिक रूप से वंचित छात्रों को वित्तीय सहायता एवं अनुदान प्रदान करें क्योंकि इनमें से कई छात्रों को इस आयु वर्ग के दौरान आय अर्जन एवं अपने परिवारों को आर्थिक रूप से सहयोग देने की आवश्यकता होती है और यह एक दुष्चक्र का निर्माण करता है।
- **सामाजिक मानदंडों में बदलाव लाना:** बालिकाओं के लिये, विवाह की उचित आयु के संबंध में सामाजिक मानदंडों में बदलाव लाना आगे पढ़ाई जारी रखने की उनकी क्षमता का प्रमुख प्रेरक तत्व है।

अधगम में सुधार के लिये व्यापक रणनीति:

- **लचीली शिक्षा प्रणाली:** लचीलेपन को अपनाने में प्रायः दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाइन संसाधनों और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्मों की सुविधा के लिये प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना शामिल होता है, जो समग्र शैक्षणिक अनुभव को संवृद्ध करता है। एक साधन होना चाहिये जहाँ कोई छात्र कई प्रकार के अधगम और आय अर्जन के अवसरों के लिये पंजीकरण करा सकता हो।
- **सुधार मूल्यांकन:** NEP 2020 में 100% माध्यमिक विद्यालय नामांकन के लक्ष्य की बात की गई है, जसि “छात्रों के नामांकन, उपस्थिति और अधगम स्तर की सावधानीपूर्वक ट्रैकिंग के माध्यम से प्राप्त किया जाना है, ताकि उन्हें स्कूल में फरि से प्रवेश करने या आगे बढ़ने के लिये उपयुक्त अवसर प्रदान किये जा सकें।”
 - मूल्यांकन कब और कैसे हो, इसमें सुधार के माध्यम से परीक्षा के दबाव को कम किया जा सकता है।
- **‘पैथवे लकिंग’:** माध्यमिक विद्यालय सुधार अवधारणाओं को **‘नपुण’ (NIPUN)** के साथ जोड़ना स्कूल सुधार वचिारों को व्यावहारिक उपायों में बदलने के लिये महत्त्वपूर्ण है।
 - परणामों की सूक्ष्मता से नगिरानी करना सुधार और अंततः सफलता की कुंजी होगा।

‘फ्यूचर रेडी स्टूडेंट्स’ तैयार करना:

- **आलोचनात्मक सोच विकसित करने पर ध्यान देना:** आलोचनात्मक सोच और अधिक समग्र, जजिजासा-आधारित, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित एवं विश्लेषण-आधारित शिक्षा के लिये अवसर प्रदान करने हेतु प्रत्येक वषिय में पाठ्यचर्या की सामग्री को उसकी मूल अनविर्यताओं तक कम किया जाना चाहिये।
- **भवषियोनमुखी स्कूल प्रणालियाँ:** छात्रों को अधिक भवषियोनमुखी बनाने के लिये हमारी स्कूली शिक्षा प्रणाली को संशोधित करने की आवश्यकता है जो बच्चों को ऐसे रास्तों पर आगे बढ़ सकने में मदद दे और उनका मार्गदर्शन कर सके जसिसे उन्हें लाभ हो तथा वे अधिक आशान्वति स्थिति में हों।
- **डजिटल मेंटरशिप कार्यक्रम:** डजिटल मेंटरशिप कार्यक्रमों को लागू करें जो छात्रों को उनकी रुचि के कषेत्रों में पेशेवरों और वशिषज्जों से जोड़ सकें। इससे छात्रों को उनके भवषिय के बारे में सूचति नरिणय लेने में मार्गदर्शन प्रदान करने में मदद मलि सकती है।

नषिकरष:

एक उभरती अरथवयवस्था के रूप में, युवाओं को आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं अवसरों के साथ पर्याप्त रूप से सशक्त बनाना महत्त्वपूर्ण है, ताकि वे अपनी और अपने परिवार एवं समुदायों की उन्नति कर सकें। भारत के अपेक्षति ‘जनसांख्यिकीय लाभांश’ और ‘डजिटल लाभांश’ की वास्तविक क्षमता को इन व्यापक कार्यों के माध्यम से साकार किया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न: भारत में युवाओं के लिये अधिगम परणामों को संवृद्ध करने में व्याप्त प्राथमिक चुनौतियों की चर्चा कीजिये। इन मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिये कनि उपायों की अनुशांसा की जा सकती है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

????????

प्रश्न: नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजिये: (2018)

1. शकिषा का अधकिर (RTE) अधनियिम के अनुसार, राज्ज में शकिषक के रूप में नयिकृत्त के लिये पात्तर होने के लिये व्कृत्त को संबधति राज्ज शकिषक शकिषा परषिद द्वारा नरिधरति न्थूनतम योग्गता रखने की आवश्यकता होगी।
2. RTE अधनियिम के अनुसार, प्राथमकि ककषाओं को पढाने के लिये, एक उम्मीदवार को राष्ट्रीय शकिषक शकिषा परषिद के दशानरिदेशों के अनुसार आयोजति शकिषक पात्तरता परीकषा उत्तीर्ण करना आवश्यक है।
3. भारत में 90% से अधकि शकिषक शकिषा संस्थान सीधे राज्ज सरकारों के अधीन हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 3
- (d) केवल 3

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. भारत में डजिटिल पहल ने कसि प्रकार से देश की शकिषा व्यवस्था के संचालन में योगदान कया है? वसितुत उत्तर दीजिये। (2020)